7 रामनरेश त्रिपाठी

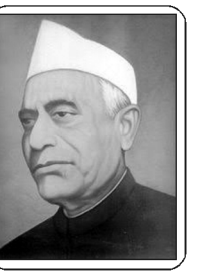

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म 4 मार्च, 1889 ई० में जिला जौनपुर (उ० प्र०) के अन्तर्गत कोइरीपुर ग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। घर के धार्मिक वातावरण तथा पिता की परमेश्वर भक्ति का पूरा प्रभाव बालक रामनरेश पर प्रारम्भ से ही पड़ा। केवल नवीं कक्षा तक स्कूल में पढ़ने के पश्चात् इनकी पढ़ाई छूट गयी। बाद में इन्होंने स्वाध्याय से हिन्दी, अंग्रेजी, बँगला, संस्कृत, गुजराती का गम्भीर अध्ययन किया और साहित्य-साधना को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। 16 जनवरी, 1962 ई० में इनका स्वर्गवास हो गया।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–सन् 1889 ई०।
- **जन्म-स्थान**–कोइरीपुर (जौनपुर)।
- **मृत्यु**–सन् 1962 ई० (प्रयागराज में)।
- **प्रमुख रचनाएँ**–मिलन, पथिक, स्वप्न, मानसी, हे प्रभो आनन्ददाता, कविता कौमुदी, ग्राम्यगीत (संपादित), गोस्वामी तुलसीदास और उनकी कविता, (आलोचना), वीरांगना, प्रेमलोक (नाटक) महात्मा बुद्ध तथा अशोक, (जीवन चरित), फूलरानी, आकाश की बातें, बुद्धि विनोद (बाल साहित्य), सुभद्रा, स्वजनों के चित्र (कहानी संग्रह)।
- **पुरस्कार**-हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार।
- **भाषा**-खड़ीबोली, हिन्दी, उर्दू।
- **शैली**-वर्णनात्मक, उपदेशात्मक।

त्रिपाठीजी मननशील, विद्वान् तथा परिश्रमी थे। ये द्विवेदी युग के उन साहित्यकारों में हैं, जिन्होंने द्विवेदी मण्डल के प्रभाव से पृथक् रहकर अपनी मौलिक प्रतिभा से साहित्य के क्षेत्र में कई कार्य किये। त्रिपाठीजी स्वच्छन्दतावादी कवि थे, ये लोकगीतों के सर्वप्रथम संकलनकर्त्ता थे। काव्य, कहानी, नाटक, निबन्ध, आलोचना तथा लोक-साहित्य आदि विषयों पर इनका पूर्ण अधिकार था। त्रिपाठीजी आदर्शवादी थे। इनकी रचनाओं में नवीन आदर्श और नवयुग का संकेत है। इनके द्वारा रचित **'पथिक'** और **'मिलन'** नामक खण्डकाव्य अत्यन्त लोकप्रिय हुए। इनकी रचनाओं की विशेषता यह है कि उनमें राष्ट्र-प्रेम तथा मानव-सेवा की उत्कृष्ट भावनाएँ बड़े सुन्दर ढंग से चित्रित हुई हैं। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष की प्राकृतिक सुषमा और पवित्र-प्रेम के सुन्दर चित्र भी इन्होंने अपनी कविताओं में चित्रित किये हैं।

प्रकृति-वर्णन के क्षेत्र में त्रिपाठीजी का योगदान उल्लेखनीय है। इन्होंने प्रकृति को आलम्बन और उद्दीपन दोनों रूपों में ग्रहण किया है। इनके प्रकृति-चित्रण की विशेषता यह है कि जिन दृश्यों का वर्णन इन्होंने किया है, वे इनके स्वयं देखे हुए अनुभूत दृश्य हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—**'पथिक'**, **'मिलन'** और **'स्वप्न'** (खण्ड काव्य), **'मानसी'** (स्फुट कविता संग्रह), **'कविता-कौमुदी'**, **'ग्राम्य गीत'** (सम्पादित), **'गोस्वामी तुलसीदास और उनकी कविता'** (आलोचना)।

त्रिपाठीजी की भाषा खड़ीबोली है। उसमें माधुर्य और ओज है। कहीं-कहीं उर्दू के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है। शैली सरस, स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण है। इनकी शैली के दो रूप प्राप्त होते हैं—वर्णनात्मक एवं उपदेशात्मक।

स्वदेश-प्रेम

अतुलनीय जिनके प्रताप का,
साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर।
घूम-घूम कर देख चुका है,
जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर।।
देख चुके हैं जिनका वैभव,
ये नभ के अनन्त तारागण।
अगणित बार सुन चुका है नभ,
जिनका विजय-घोष रण-गर्जन।।1।।

शोभित है सर्वोच्च मुकुट से,
जिनके दिव्य देश का मस्तक,
गूँज रही हैं सकल दिशाएँ,
जिनके जय-गीतों से अब तक।।
जिनकी महिमा का है अविरल,
साक्षी सत्य-रूप हिम-गिरि-वर।
उतरा करते थे विमान-दल
जिसके विस्तृत वक्षःस्थल पर।।2।।

सागर निज छाती पर जिनके,
अगणित अर्णव-पोत उठाकर।
पहुँचाया करता था प्रमुदित,
भूमंडल के सकल तटों पर।।
नदियाँ जिसकी यश-धारा-सी
बहती हैं अब भी निशि-वासर।
ढूँढ़ो उनके चरण-चिह्न भी,
पाओगे तुम इनके तट पर।।3।।

विषुवत् रेखा का वासी जो,
जीता है नित हाँफ-हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक,
यह भी अपनी मातृभूमि पर।।
ध्रुव-वासी, जो हिम में तम में,
जी लेता है काँप-काँप कर।
वह भी अपनी मातृभूमि पर,
कर देता है प्राण निछावर।।4।।

तुम तो, हे प्रिय बंधु, स्वर्ग-सी,
सुखद, सकल विभवों की आकर।
धरा-शिरोमणि मातृ-भूमि में,
धन्य हुए हो जीवन पाकर।।
तुम जिसका जल अन्न ग्रहण कर,
बड़े हुए लेकर जिसकी रज।
तन रहते कैसे तज दोगे,
उसको, हे वीरों के वंशज।।5।।

जब तक साथ एक भी दम हो,
हो अवशिष्ट एक भी धड़कन।
रखो आत्म-गौरव से ऊँची,
पलकें ऊँचा सिर, ऊँचा मन।।
एक बूँद भी रक्त शेष हो,
जब तक मन में हे शत्रुंजय!
दीन वचन मुख से न उचारो,
मानो नहीं मृत्यु का भी भय।।6।।
निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु एक है विश्राम-स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नव जीवन-संबल।।
मृत्यु एक सरिता है, जिसमें,
श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है,
काया-रूपी वस्त्र बहाकर।।7।।

सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।।
देश-प्रेम वह पुण्य-क्षेत्र है,
अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित।।8।।

('स्वप्न' से)

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) अतुलनीय जिनके ..... रण-गर्जन। **(2020ME)**

(ख) विषुवत् रेखा ..... प्राण निछावर।

(ग) तुम तो ..... वीरों के वंशज।

(घ) निर्भय स्वागत ..... वस्त्र बहाकर। **(2018HA,HF)**

(ङ) सच्चा प्रेम वही ..... है विकसित। **(2016CC,20MF)**

(च) जब तक साथ एक ..... मृत्यु का भी भय। **(2017AB,AE)**

(छ) सागर निज छाती पर ..... तुम इनके तट पर। **(2019AA,AD,AE,AF)**

2. रामनरेश त्रिपाठी का जीवन-परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CD,17AB,AD,20MG)**

3. रामनरेश त्रिपाठी के साहित्यिक अवदान एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. रामनरेश त्रिपाठी का जीवन-परिचय लिखिए तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

5. रामनरेश त्रिपाठी की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

6. 'स्वदेश-प्रेम' कविता का सारांश लिखिए।

7. 'स्वदेश-प्रेम' कविता का केन्द्रीय-भाव लिखिए।

8. 'स्वदेश प्रेम' कविता का आशय लिखिए।

9. जन्म-भूमि को माता-तुल्य मानना ही हमारा धर्म है। क्यों?

10. मातृ-भूमि के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं? 'स्वदेश प्रेम' कविता के आधार पर निश्चित कीजिए।

11. संसार को परीक्षास्थल मानने से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

12. स्वदेश-प्रेम कविता में कवि ने अतीत की किन गौरवपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया है?

13. मातृभूमि के प्रति मनुष्य में स्वाभाविक प्रेम होता है। 'स्वदेश-प्रेम' कविता से इसके पक्ष में प्रमाण प्रस्तुत कीजिए।

14. 'स्वदेश प्रेम' शीर्षक कविता की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

15. 'स्वदेश-प्रेम' कविता से रूपक अलङ्कार के तीन उदाहरण लिखिए।

16. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस एवं छन्द का उल्लेख कीजिए–

तुम जिसका जल अन्न ग्रहण कर, बड़े हुए लेकर जिसकी रज।
तन रहते कैसे तज दोगे, उसको, हे वीरों के वंशज।।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) पाठ की काव्य-पंक्तियों के माध्यम से रामनरेश त्रिपाठी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

(ii) स्वदेश-प्रेम पर आधारित अन्य कविता आप कंठस्थ करके लिखें।

टिप्पणी

➥ स्वदेश-प्रेम

अतुलनीय = बेजोड़। **दिवाकर** = सूर्य। **सत्य-रूप-हिम-गिरि-वर** = सत्य स्वरूप वाला श्रेष्ठ हिमालय। **निशाकर** = चन्द्रमा। **तम** = अन्धकार। **अर्णव-पोत** = समुद्री जहाज। **रण-गर्जन** = युद्ध गर्जना। **साक्षी** = प्रत्यक्ष दृष्टा। **वक्षःस्थल** = छाती। **विभवों की आकर** = वैभवों (ऐश्वर्यों, सुखों) की खान। **अवशिष्ट** = शेष। **सम्बल** = सहारा। **कातर** = दुःखी। **शत्रुञ्जय** = शत्रुजयी। **निष्प्राण** = प्राणहीन, निर्जीव। **अमल** = स्वच्छ। **विलसित** = सुशोभित। **अर्णव** = समुद्र में चलने वाला जहाज। **प्रमुदित** = प्रसन्न होकर। **सकल** = समस्त। **निशि-वासर** = रात-दिन। **हिम** = बर्फ। **आकर** = खजाना। **दम** = सांस। **अवशिष्ट** = बाकी। **नूतन** = नवीन, नया। **तृप्ति** = संतोष। **सरिता** = नदी। **विषुवत रेखा** = भूमध्य रेखा।

●●